

पालि बौद्ध साहित्य और आयुर्वेद में स्वप्न-विचार एवं शकुन-परंपरा

निगम भारद्वाज

शोधकर्ता, शैक्षणिक योग्यता: एम.ए., बौद्ध अध्ययन New Hope AAS Consultants Private Limited

Abstract

स्वप्न और शकुन मानव जीवन के ऐसे अनुभव हैं, जिनका प्राचीन भारतीय साहित्य, दर्शन, चिकित्सा और धार्मिक परंपराओं में विशेष स्थान रहा है। मनुष्य निद्रा की अवस्था में अनेक प्रकार के दृश्य, घटनाएँ, अनुभूतियाँ और विचार अनुभव करता है। जाग्रत अवस्था में इन अनुभवों को समझने का प्रयास करते हुए प्राचीन समाज ने स्वप्नों को कभी मन की गतिविधि, कभी पूर्व अनुभवों की पुनरावृत्ति, कभी शारीरिक अवस्था का संकेत और कभी भविष्य की संभावित घटनाओं से संबंधित निमित्त के रूप में देखा। इसी प्रकार शकुन का संबंध किसी वस्तु को देखने, किसी ध्वनि को सुनने अथवा किसी वस्तु का स्पर्श करने से उत्पन्न शुभ-अशुभ धारणाओं से रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में पालि साहित्य और आयुर्वेदिक संहिताओं के विशेष संदर्भ में स्वप्न एवं शकुन की अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। मिलिन्दपञ्च में स्वप्न की परिभाषा, स्वप्न देखने वाले व्यक्ति की मानसिक अवस्था, निद्रा के विभिन्न चरणों और स्वप्नफल की व्याख्या पर विचार किया गया है। चरक संहिता तथा सुश्रुत संहिता में स्वप्नों के वर्गीकरण, दोषों, निद्रा और रोग-पूर्वानुमान से संबंधित विचारों का विवेचन किया गया है। महा-सुपिन जातक में वर्णित सोलह स्वप्नों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक समस्याओं की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त महामंगल जातक तथा बौद्ध मंगल-संबंधी साहित्य में दृश्य, श्रवण और स्पर्श-आधारित शकुनों तथा नैतिक आचरण के महत्त्व पर विचार किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वप्न और शकुन की अवधारणाएँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उनके माध्यम से मनुष्य, समाज, शासन, स्वास्थ्य और नैतिक जीवन पर चिंतन किया जाता था। यह अध्ययन प्राचीन भारतीय बौद्धिक परंपरा में मानसिक अनुभव तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विश्वासों के संबंध को समझने में सहायक है।¹³⁶⁷⁸

मुख्य शब्द: स्वप्न, शकुन, पालि साहित्य, बौद्ध अध्ययन, आयुर्वेद, मिलिन्दपञ्च, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, महा-सुपिन जातक, मंगल।

स्वप्न मानव जीवन का एक सामान्य, किंतु जटिल अनुभव है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी निद्रा के दौरान ऐसे दृश्य, घटनाएँ अथवा अनुभूतियाँ अनुभव करता है, जिनका संबंध उसके जाग्रत जीवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में हो सकता है। स्वप्न कभी परिचित व्यक्तियों और स्थानों से संबंधित होते हैं, कभी पूर्व में देखी गई घटनाओं की स्मृति प्रस्तुत करते हैं, कभी व्यक्ति की इच्छाओं, आशंकाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करते हैं और कभी ऐसे दृश्य उपस्थित करते हैं जिनका जाग्रत अनुभव से स्पष्ट संबंध दिखाई नहीं देता। प्राचीन भारतीय साहित्य में इस अनुभव को समझने के लिए अनेक प्रकार की व्याख्याएँ विकसित हुईं। स्वप्न को मन की गतिविधि, शरीर की अवस्था, पूर्व अनुभव, संभावित भविष्य और धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतों से जोड़कर देखा गया। इस

कारण स्वप्न का अध्ययन केवल निद्रा में उत्पन्न अनुभवों का अध्ययन नहीं रहा, बल्कि वह मानव जीवन की व्यापक समझ का एक हिस्सा बन गया।

प्राचीन भारतीय चिंतन में स्वप्न का महत्त्व विभिन्न साहित्यिक परंपराओं में दिखाई देता है। धार्मिक ग्रंथों में स्वप्न कभी विशेष घटनाओं से पहले दिखाई देने वाले संकेत के रूप में वर्णित है, तो चिकित्सा ग्रंथों में उसे व्यक्ति की शारीरिक तथा मानसिक अवस्था के निरीक्षण से जोड़ा गया है। दार्शनिक साहित्य में स्वप्न का संबंध चित्त, अनुभूति और चेतना के प्रश्नों से स्थापित होता है। इस विविधता के कारण स्वप्न की अवधारणा को किसी एक व्याख्या में सीमित करना उचित नहीं है। विभिन्न ग्रंथों में स्वप्न का अर्थ उनके विषय, उद्देश्य और वैचारिक दृष्टिकोण के अनुसार बदलता है।

आयुर्वेद में जीवन और स्वास्थ्य की समग्र समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है। आयुर्वेदिक साहित्य में शरीर, मन, इंद्रियों, निद्रा और रोग के संबंधों पर विचार मिलता है। इस परंपरा में स्वप्न का उल्लेख कभी मन की अनुभूति के रूप में, कभी शारीरिक दोषों से संबंधित घटना के रूप में और कभी रोग की स्थिति का अनुमान लगाने वाले संकेत के रूप में किया गया है। चरक संहिता तथा सुश्रुत संहिता में स्वप्न से संबंधित विचार इस व्यापक चिकित्सकीय दृष्टिकोण का हिस्सा हैं। यहाँ स्वप्न का महत्त्व व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवन की स्थिति को समझने के संदर्भ में है।³

बौद्ध साहित्य में स्वप्न की अवधारणा का विशेष महत्त्व है। पालि निकायों में स्वप्न संबंधी उल्लेख मिलते हैं, जबकि मिलिन्दपञ्च में स्वप्न की परिभाषा, उसके उत्पन्न होने की अवस्था, स्वप्न देखने वाले व्यक्ति और स्वप्नफल के संबंध में विस्तृत प्रश्नोत्तर प्रस्तुत किए गए हैं। महा-सुपिन जातक में सोलह स्वप्नों के माध्यम से भविष्य की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। इन स्वप्नों की व्याख्या में शासन, न्याय, पारिवारिक जीवन, कृषि, अर्थव्यवस्था और धार्मिक आचरण जैसे विषय सामने आते हैं। इस प्रकार स्वप्न बौद्ध साहित्य में केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं, बल्कि सामाजिक चिंतन का माध्यम भी बन जाता है।¹⁶

शकुन की अवधारणा भी प्राचीन भारतीय समाज में व्यापक रूप से प्रचलित थी। किसी विशेष दृश्य, ध्वनि, वस्तु या स्पर्श को शुभ अथवा अशुभ मानकर उसके आधार पर व्यक्ति भविष्य की संभावनाओं का अनुमान लगाने का प्रयास करता था। बौद्ध साहित्य में शकुन संबंधी विभिन्न मतों का उल्लेख मिलता है। कुछ लोग दृश्य को शुभ मानते थे, कुछ श्रवण को और कुछ स्पर्श को। किंतु बौद्ध मंगल-संबंधी विचारों में शुभता को नैतिक आचरण, सद्भाव, संयम और विवेक से भी जोड़ा गया है। इससे यह संकेत मिलता है कि बौद्ध परंपरा में मंगल की अवधारणा केवल बाहरी संकेतों पर निर्भर नहीं थी।⁹

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य पालि साहित्य तथा आयुर्वेदिक संहिताओं में स्वप्न एवं शकुन से संबंधित विचारों का अध्ययन करना है। इसमें दोनों परंपराओं की समानताओं और भिन्नताओं को स्पष्ट करने के साथ-साथ उनके सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक महत्त्व पर विचार किया गया है। अध्ययन का आधार मूल अंग्रेजी शोध-पत्र में उद्धृत ग्रंथ और संदर्भ हैं। इसलिए यहाँ वर्णित स्वप्नफल और शकुनों को प्राचीन साहित्य में उपलब्ध मान्यताओं के रूप में समझना चाहिए, न कि आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाणों के रूप में।¹¹⁰

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य पालि साहित्य और आयुर्वेद में स्वप्न तथा शकुन की अवधारणाओं को समझना और उनके बीच वैचारिक संबंधों का विवेचन करना है। इसके अंतर्गत सबसे पहले स्वप्न की परिभाषा और उसकी प्रकृति का अध्ययन किया गया है। इसके बाद मिलिन्दपञ्च तथा चरक संहिता में प्रस्तुत स्वप्न-वर्गीकरण की तुलना की गई है। निद्रा की विभिन्न अवस्थाओं, मन की सक्रियता और स्वप्न-अनुभव के संबंध को भी अध्ययन का हिस्सा बनाया गया है। विशेष रूप से महा-सुपिन जातक के सोलह स्वप्नों का विवेचन करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि उनके माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को किस प्रकार प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया

गया है। शकुन के अध्ययन में दृश्य, श्रवण और स्पर्श संबंधी मान्यताओं के साथ बौद्ध मंगल की नैतिक अवधारणा पर विचार किया गया है।⁶

स्वप्न की परिभाषा प्राचीन साहित्य में विभिन्न दृष्टिकोणों से की गई है। मिलिन्दपञ्च में स्वप्न की परिभाषा इस पालि वाक्यांश से प्रस्तुत होती है—“सुपिं नाम यं चित्तस्स आपथं उपगच्छति।” इसका आशय है कि स्वप्न वह अनुभव है, जो चित्त के अनुभव-पथ में उपस्थित होता है। इस परिभाषा में स्वप्न को मन की अनुभूति के रूप में समझा गया है। यह स्पष्ट करती है कि स्वप्न की घटना को समझने के लिए चित्त की गतिविधि पर विचार करना आवश्यक है। स्वप्न में व्यक्ति जिन दृश्यों और घटनाओं का अनुभव करता है, वे जाग्रत अवस्था के प्रत्यक्ष अनुभवों से भिन्न हो सकते हैं, किंतु उनका अनुभव व्यक्ति के मन में ही होता है।¹

मिलिन्दपञ्च में प्रस्तुत यह परिभाषा स्वप्न की प्रकृति को किसी एक प्रकार की वस्तु अथवा दृश्य तक सीमित नहीं करती। स्वप्न में अनेक प्रकार के रूप, रंग, दृश्य और अनुभव उपस्थित हो सकते हैं। किसी व्यक्ति को परिचित वस्तु दिखाई दे सकती है, किसी को भय उत्पन्न करने वाली घटना अनुभव हो सकती है और किसी को ऐसी परिस्थिति दिखाई दे सकती है, जिसका उसके पूर्व जीवन से कोई स्पष्ट संबंध न हो। इस विविधता को ध्यान में रखते हुए स्वप्न को चित्त के अनुभव-क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली घटना के रूप में परिभाषित करना एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।¹

सुश्रुत संहिता के टीकाकार डल्हण की व्याख्या में स्वप्न का संबंध निद्रा और तंद्रा से स्थापित किया गया है। उनके अनुसार, निद्रा से प्रभावित तथा तंद्रा से युक्त मन में विषयों का ग्रहण होना स्वप्न है। इस व्याख्या में स्वप्न की उत्पत्ति के लिए मन की ऐसी अवस्था महत्वपूर्ण है, जिसमें सामान्य जाग्रत चेतना प्रभावित हो जाती है। व्यक्ति की इंद्रियाँ पूर्ण जाग्रत अवस्था की तरह कार्य नहीं करतीं, किंतु मन में विषयों की अनुभूति जारी रहती है। इस प्रकार सुश्रुत की व्याख्या स्वप्न को निद्रा की अवस्था से जोड़कर समझाती है।³

चरक संहिता में स्वप्न को मनोवह स्रोतों और वात, पित्त तथा कफ नामक त्रिदोषों की अवस्था से संबंधित माना गया है। चरक के विचारों के अनुसार मनोवह स्रोतों में दोषों की विकृत अवस्था स्वप्न की प्रकृति को प्रभावित कर सकती है। यहाँ स्वप्न केवल मानसिक घटना नहीं, बल्कि शरीर और मन के पारस्परिक संबंध का एक पक्ष है। आयुर्वेद की व्यापक दृष्टि में शरीर की स्थिति और मानसिक अनुभव एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। इसीलिए स्वप्न का अध्ययन व्यक्ति की शारीरिक दशा को समझने के लिए भी उपयोगी माना गया है।²⁴⁵

चरक संहिता में स्वप्न और निद्रा के बीच अंतर का उल्लेख मिलता है। निद्रा की अवस्था में मन और इंद्रियाँ अपने विषयों से निवृत्त हो जाती हैं। इसके विपरीत, स्वप्न के समय इंद्रियों की सामान्य सक्रियता कम होने पर भी मन विभिन्न प्रकार के विषयों का अनुभव करता रहता है। इस अंतर से यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न और निद्रा को एक ही प्रक्रिया नहीं माना गया। निद्रा वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति विश्राम करता है, जबकि स्वप्न उस अवस्था के भीतर उत्पन्न होने वाला विशिष्ट मानसिक अनुभव है। प्राचीन ग्रंथों में इस अंतर को समझने का प्रयास मन और इंद्रियों की भूमिका पर आधारित है।²⁴⁵

इन तीनों व्याख्याओं को साथ रखने पर स्वप्न की अवधारणा के तीन प्रमुख पक्ष सामने आते हैं। पहला पक्ष चित्त की अनुभूति है, जिसे मिलिन्दपञ्च विशेष रूप से रेखांकित करता है। दूसरा पक्ष निद्रा और तंद्रा की अवस्था है, जिसे सुश्रुत की व्याख्या में महत्व दिया गया है। तीसरा पक्ष शरीर और मन की पारस्परिक स्थिति है, जिसे चरक संहिता में दोषों तथा मनोवह स्रोतों के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। ये दृष्टिकोण पूर्णतः समान नहीं हैं, किंतु मिलकर स्वप्न की बहुआयामी प्रकृति को समझने में सहायता करते हैं।³

मिलिन्दपञ्च में स्वप्नों का वर्गीकरण पाँच युगों में किया गया है, जिनसे कुल दस प्रकार के स्वप्न बनते हैं। इनमें शुभ अथवा कल्याणक स्वप्न और अशुभ अथवा पापक स्वप्न का उल्लेख है। यह वर्गीकरण स्वप्न के भावात्मक परिणाम

को आधार बनाता है। कोई स्वप्न व्यक्ति को सुखद अनुभव प्रदान करता है, जबकि कोई अन्य स्वप्न भय, चिंता या दुःख उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार स्वप्न का अनुभव केवल उसके दृश्य से नहीं, बल्कि व्यक्ति पर पड़ने वाले भावात्मक प्रभाव से भी संबंधित है।¹

दूसरा युग्म दिट्ठपुब्ब और अदिट्ठपुब्ब स्वप्नों का है। दिट्ठपुब्ब का अर्थ पहले देखी गई वस्तु अथवा घटना से संबंधित स्वप्न है, जबकि अदिट्ठपुब्ब का संबंध ऐसी वस्तु या घटना से है, जिसे व्यक्ति ने पहले नहीं देखा। यह वर्गीकरण स्वप्न और पूर्व अनुभव के संबंध को स्पष्ट करता है। तीसरे युग्म में कतपुब्ब और अकतपुब्ब स्वप्नों का उल्लेख है। पहले का संबंध पूर्व में किए गए कार्य से है और दूसरे का संबंध ऐसे कार्य से है, जो पहले नहीं किया गया। इस प्रकार स्वप्नों को अनुभव और क्रिया की स्मृति से भी जोड़ा गया है।

चौथे युग्म में खेम और सभय स्वप्न हैं। खेम स्वप्न शांत, सुरक्षित अथवा निर्भय अनुभव से संबंधित हैं, जबकि सभय स्वप्न भय उत्पन्न करते हैं। पाँचवें युग्म में सन्तिके और दूरे स्वप्नों का उल्लेख है, जिनका संबंध निकटता अथवा दूरी से माना गया है। इस वर्गीकरण से पता चलता है कि मिलिन्दपञ्च स्वप्न के अनेक पक्षों को अलग-अलग श्रेणियों में व्यवस्थित करता है। स्वप्न का भावात्मक स्वरूप, पूर्व अनुभव से संबंध, कार्य-स्मृति और विषय की निकटता इस वर्गीकरण के आधार हैं।

चरक संहिता में स्वप्नों का वर्गीकरण सात प्रकारों में किया गया है। इनमें दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित, भाविक और दोषज स्वप्न शामिल हैं। दृष्ट स्वप्न उन वस्तुओं अथवा घटनाओं से संबंधित होते हैं, जिन्हें व्यक्ति पहले देख चुका होता है। श्रुत स्वप्न उन विषयों से जुड़े होते हैं, जिन्हें उसने सुना हो। अनुभूत स्वप्न का संबंध पहले अनुभव किए गए विषयों से है। इस प्रकार चरक संहिता स्वप्नों की उत्पत्ति में स्मृति और पूर्व अनुभव की भूमिका को स्वीकार करती है।²⁴⁵

प्रार्थित स्वप्न व्यक्ति की इच्छाओं और आकांक्षाओं से संबंधित माने गए हैं। व्यक्ति जिन विषयों की कामना करता है, वे उसके स्वप्न में उपस्थित हो सकते हैं। कल्पित स्वप्न कल्पना के आधार पर निर्मित होते हैं। इन दोनों श्रेणियों में मन की इच्छात्मक और रचनात्मक गतिविधि को महत्त्व दिया गया है। भाविक स्वप्नों को शुभ अथवा अशुभ संभावित घटनाओं के संकेत के रूप में वर्णित किया गया है। दोषज स्वप्न वात, पित्त और कफ की विकृत अवस्था से संबंधित माने गए हैं। इस प्रकार चरक का वर्गीकरण स्वप्न के अनुभवात्मक पक्ष के साथ उसकी उत्पत्ति के संभावित कारणों पर भी विचार करता है।²⁴⁵

दोनों वर्गीकरणों की तुलना करने पर कुछ समानताएँ स्पष्ट होती हैं। मिलिन्दपञ्च के दिट्ठपुब्ब स्वप्न की तुलना चरक के दृष्ट स्वप्न से की जा सकती है, क्योंकि दोनों में पहले देखे गए विषयों का संबंध है। कतपुब्ब स्वप्न की तुलना चरक के अनुभूत स्वप्न से की जा सकती है, क्योंकि दोनों पूर्व अनुभवों अथवा क्रियाओं से जुड़े हैं। भाविक स्वप्न की तुलना पूर्व-निमित्त अथवा शुभ-अशुभ संकेत से संबंधित स्वप्नों के साथ की जा सकती है। इसी प्रकार खेम और सभय स्वप्नों में अनुभव की भावात्मक प्रकृति का महत्त्व दिखाई देता है।¹

फिर भी दोनों वर्गीकरणों को पूर्णतः समान नहीं माना जा सकता। मिलिन्दपञ्च में स्वप्न के विषय, अनुभव और भावात्मक प्रकृति पर विशेष ध्यान दिया गया है, जबकि चरक संहिता में स्वप्न की उत्पत्ति के कारणों को भी वर्गीकरण का आधार बनाया गया है। चरक का दोषज स्वप्न आयुर्वेद की शारीरिक-मानसिक अवधारणा से संबंधित है, जबकि मिलिन्दपञ्च के दस प्रकारों में इसका प्रत्यक्ष समान वर्ग उपलब्ध नहीं है। इसलिए तुलनात्मक अध्ययन में समानता के साथ-साथ भिन्नता को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।²⁴⁵

मिलिन्दपञ्च में स्वप्न देखने वाले व्यक्तियों की छह श्रेणियों का उल्लेख मिलता है। इनमें वात, पित्त और श्लेष्मिक अथवा कफ से संबंधित व्यक्ति शामिल हैं। इसके अतिरिक्त देवताओं के प्रभाव से स्वप्न देखने वाले, अपनी आदतों अथवा पूर्ववृत्तियों से प्रभावित स्वप्न देखने वाले और पूर्व-निमित्त से संबंधित स्वप्न देखने वाले व्यक्तियों का उल्लेख

किया गया है। इस वर्गीकरण में स्वप्न देखने वाले व्यक्ति की प्रकृति और उसके अनुभव की संभावित उत्पत्ति पर ध्यान दिया गया है।

ग्रंथ-संदर्भ के आधार पर यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि इन श्रेणियों में पूर्व-निमित्त से संबंधित स्वप्न को विशेष महत्त्व दिया गया है, जबकि अन्य स्वप्नों को फलहीन अथवा असत्य माना गया है। चरक संहिता में भी सभी स्वप्नों को समान रूप से फलदायी नहीं माना गया। दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित और कल्पित स्वप्नों को पूर्व अनुभव, इच्छा या कल्पना से संबंधित माना गया है। ऐसे स्वप्नों को भविष्य के निश्चित परिणाम का संकेत मानना आवश्यक नहीं है। इसके विपरीत, भाविक स्वप्नों को संभावित शुभ-अशुभ परिणामों से जोड़ा गया है।

चरक संहिता में स्वप्न की अवधि और उसके उत्पन्न होने के समय का भी उल्लेख किया गया है। उपलब्ध ग्रंथ-विवरण के अनुसार, रात के प्रारंभिक भाग में देखे गए स्वप्न का फल कम माना गया है। अत्यधिक छोटे अथवा लंबे स्वप्नों तथा दिन में सोते समय देखे गए स्वप्नों को भी फलहीन बताया गया है। इन विचारों से पता चलता है कि प्राचीन आयुर्वेदिक परंपरा में स्वप्न का मूल्यांकन केवल उसके विषय के आधार पर नहीं किया जाता था, बल्कि उसकी समयगत स्थिति और व्यक्ति की अवस्था को भी महत्त्व दिया जाता था।²⁴⁵

स्वप्नफल का प्रश्न प्राचीन साहित्य में एक जटिल विषय है। किसी स्वप्न को भविष्य का संकेत मानने के लिए उसकी व्याख्या आवश्यक समझी जाती थी। इस कारण स्वप्न देखने की घटना और उसके परिणाम के ज्ञान को अलग-अलग प्रक्रियाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मिलिन्दपञ्च में नागसेन का विवेचन इस अंतर को स्पष्ट करता है। स्वप्न देखने वाला व्यक्ति स्वप्न का अनुभव करता है, लेकिन उसके संभावित परिणाम को जानना एक अलग प्रश्न है। इस दृष्टिकोण से स्वप्न की व्याख्या एक स्वतंत्र प्रक्रिया बन जाती है।¹

मिलिन्दपञ्च में राजा मिलिन्द और भिक्षु नागसेन के बीच पूर्व-निमित्त स्वप्न को लेकर संवाद मिलता है। राजा पूछते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को भविष्य का संकेत देने वाला स्वप्न दिखाई देता है, तो क्या वह स्वयं उस संकेत की खोज करता है, क्या कोई दूसरा व्यक्ति उसे स्वप्न दिखाता है, अथवा स्वप्न अपने आप उसके चित्त में उपस्थित होता है। यह प्रश्न स्वप्न की उत्पत्ति और व्यक्ति की इच्छा के बीच संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।¹

नागसेन उत्तर देते हैं कि पूर्व-निमित्त स्वप्न न तो व्यक्ति के जानबूझकर किए गए प्रयास से उत्पन्न होता है और न ही कोई दूसरा व्यक्ति उसे चित्त में स्थापित करता है। वह अपने आप चित्त के अनुभव-पथ में उपस्थित होता है। इस विचार को समझाने के लिए दर्पण का उदाहरण दिया गया है। दर्पण स्वयं किसी वस्तु की खोज नहीं करता और न ही कोई व्यक्ति प्रतिबिंब को दर्पण पर रखता है। जब कोई वस्तु दर्पण के सामने आती है, तब उसका प्रतिबिंब दिखाई देता है। इसी प्रकार नागसेन के विवेचन में स्वप्न का संकेत स्वप्न देखने वाले व्यक्ति के जानबूझकर किए गए प्रयास का परिणाम नहीं है।¹

राजा मिलिन्द इसके बाद पूछते हैं कि क्या वही चित्त, जो स्वप्न देखता है, उसके शुभ अथवा अशुभ परिणाम को भी जानता है। नागसेन इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक देते हैं। उनके अनुसार, स्वप्न देखने और उसके परिणाम को जानने के बीच अंतर है। व्यक्ति स्वप्न देखने के बाद उसे दूसरों को बताता है और फिर उसकी व्याख्या की जाती है। इस विचार को शरीर पर उत्पन्न चिह्नों और त्वचा के दानों के उदाहरण से स्पष्ट किया गया है। शरीर पर उत्पन्न चिह्न स्वयं अपने परिणामों का ज्ञान नहीं रखते, किंतु उनकी स्थिति देखकर व्याख्याकार संभावित अर्थ बताते हैं।¹

यह संवाद स्वप्न की घटना और स्वप्नफल की व्याख्या के बीच वैचारिक अंतर प्रस्तुत करता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्राचीन बौद्ध साहित्य में स्वप्न के अर्थ को स्वतः स्पष्ट मानने के बजाय उसकी व्याख्या की आवश्यकता स्वीकार की गई है। स्वप्न देखने वाला व्यक्ति अपने अनुभव का वर्णन करता है, जबकि उसके अर्थ का निर्धारण एक अलग प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। इस विवेचन को स्वप्न-व्याख्या की ऐतिहासिक अवधारणा के रूप में समझना उचित है।

मिलिन्दपञ्च में निद्रा की प्रारंभिक, मध्य और अंतिम अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। प्रारंभिक अवस्था में शरीर में भारीपन, दुर्बलता, शिथिलता और निष्क्रियता का अनुभव होता है। मध्य अवस्था को हल्की अथवा चंचल निद्रा के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें व्यक्ति की मानसिक गतिविधि पूर्णतः समाप्त नहीं होती। अंतिम अवस्था में मन भीतर की ओर लौट जाता है और गहरी निद्रा की स्थिति उत्पन्न होती है। इस विवरण में स्वप्न का संबंध विशेष रूप से निद्रा की मध्य अवस्था से स्थापित किया गया है।¹

ग्रंथ में हल्की निद्रा को कपिनिद्रा कहा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इसकी तुलना सुश्रुत संहिता की तंद्रा से की गई है। तंद्रा के समय इंद्रियाँ अपने विषयों को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पातीं, लेकिन वे आंशिक रूप से सक्रिय रहती हैं। इस अवस्था में निद्रा के लक्षण उपस्थित होते हैं, फिर भी मन में अनुभूति की संभावना बनी रहती है। मिलिन्दपञ्च में कपिनिद्रा और सुश्रुत में तंद्रा के बीच यह तुलनात्मक संबंध दोनों परंपराओं में हल्की निद्रा के निरीक्षण को दर्शाता है।³

नागसेन के अनुसार, स्वप्न देखने वाला व्यक्ति न तो पूरी तरह जाग्रत होता है और न ही गहरी निद्रा में होता है। स्वप्न के लिए मन की कुछ सक्रियता आवश्यक मानी गई है। जब व्यक्ति गहरी निद्रा में होता है और मन की सक्रियता समाप्त हो जाती है, तब स्वप्न का अनुभव नहीं होता। इसके विपरीत, हल्की निद्रा में मन किसी सीमा तक सक्रिय रहता है, इसलिए स्वप्न उत्पन्न हो सकते हैं। इस विचार को समझाने के लिए दर्पण और प्रकाश के उदाहरण दिए गए हैं। अंधकार में दर्पण पर प्रतिबिंब दिखाई नहीं देता; इसी प्रकार मन की सक्रियता के अभाव में स्वप्न का अनुभव नहीं होता।¹

इस विवेचन में चेतना और निद्रा के संबंध पर विचार किया गया है। बौद्ध ग्रंथ मन की सक्रियता को स्वप्न-अनुभव के लिए महत्वपूर्ण मानता है। आयुर्वेदिक ग्रंथों में तंद्रा तथा इंद्रियों की आंशिक सक्रियता का वर्णन इस संदर्भ में तुलनात्मक रूप से उपयोगी है। दोनों परंपराओं में निद्रा को एक समान और अविभाजित अवस्था के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसमें विभिन्न स्तरों अथवा अवस्थाओं की संभावना स्वीकार की गई है।³

महा-सुपिन जातक जातक साहित्य की एक महत्वपूर्ण कथा है, जिसमें कोसल के राजा द्वारा देखे गए सोलह स्वप्नों का वर्णन मिलता है। राजा इन स्वप्नों से चिंतित होता है और उनके अर्थ जानने के लिए विभिन्न व्यक्तियों से परामर्श करता है। ब्राह्मण इन स्वप्नों के आधार पर अशुभ परिणामों की आशंका व्यक्त करते हैं। अंततः राजा बुद्ध के पास जाता है, जहाँ इन स्वप्नों की व्याख्या की जाती है। बुद्ध बताते हैं कि इन स्वप्नों का संबंध तत्काल किसी अनिष्ट से नहीं, बल्कि भविष्य में उत्पन्न होने वाली सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक परिस्थितियों से है।⁶

इस जातक की विशेषता यह है कि सोलह स्वप्नों की व्याख्या केवल राजा के व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहती। स्वप्नों के माध्यम से शासन की प्रकृति, न्याय की स्थिति, कृषि, आर्थिक संसाधनों का वितरण, पारिवारिक संबंध और धार्मिक जीवन जैसे व्यापक विषयों को प्रस्तुत किया जाता है। इन स्वप्नों को प्रतीकात्मक रूप में पढ़ने पर सामाजिक व्यवस्था की समस्याएँ सामने आती हैं। इस कारण जातक की कथा को नैतिक और सामाजिक आलोचना के एक साहित्यिक माध्यम के रूप में भी समझा जा सकता है।

पहले स्वप्न में राजा चार काले बैलों को चार दिशाओं से राजप्रांगण में आते हुए देखता है। वे संघर्ष करने के लिए आते हैं, किंतु बिना वास्तविक युद्ध किए लौट जाते हैं। बुद्ध की व्याख्या में यह भविष्य की ऐसी स्थिति का संकेत है, जब वर्षा का आभास तो होगा, बादल गर्जना करेंगे, लेकिन वर्षा नहीं होगी। इससे कृषि और जनजीवन प्रभावित हो सकते हैं। इस स्वप्न में प्राकृतिक परिस्थितियों और कृषि-आधारित जीवन के बीच संबंध दिखाई देता है। वर्षा का अभाव केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन और आजीविका के लिए भी महत्वपूर्ण है।

दूसरे स्वप्न में राजा छोटे पौधों को बहुत कम ऊँचाई में फूलते और फलते हुए देखता है। जातक की व्याख्या में यह भविष्य में कम आयु में वयस्क जीवन और पारिवारिक दायित्वों में प्रवेश करने वाली पीढ़ी से संबंधित है। पौधों का

शीघ्र फूलना और फलना सामाजिक जीवन में समय से पहले होने वाले परिवर्तन का प्रतीक बनता है। यहाँ स्वप्न के दृश्य और उसकी सामाजिक व्याख्या के बीच प्रतीकात्मक संबंध स्थापित किया गया है।^१

तीसरे स्वप्न में गायें अपने नवजात बछड़ों का दूध पीती दिखाई देती हैं। इसकी व्याख्या भविष्य में वृद्ध माता-पिता के प्रति सम्मान में कमी के रूप में की गई है। संतानें परिवार के संसाधनों पर नियंत्रण रखेंगी और वृद्ध माता-पिता अपनी आवश्यकताओं के लिए उन पर निर्भर हो सकते हैं। यह स्वप्न पारिवारिक संबंधों और पीढ़ियों के बीच दायित्वों के परिवर्तन को प्रस्तुत करता है। जातक की दृष्टि में परिवार के भीतर सम्मान और सहारा सामाजिक नैतिकता का महत्वपूर्ण पक्ष है।

चौथे स्वप्न में मजबूत और अनुभवी बैलों को हटाकर छोटे बैलों पर भार रखा जाता है, किंतु वे गाड़ी खींचने में असमर्थ रहते हैं। बुद्ध की व्याख्या में यह भविष्य के शासन और न्याय-व्यवस्था में अनुभवहीन व्यक्तियों को महत्वपूर्ण पद दिए जाने का संकेत है। योग्य और अनुभवी व्यक्तियों की उपेक्षा से प्रशासनिक कार्य प्रभावित हो सकते हैं। इस स्वप्न में बैलों की क्षमता और शासन में नियुक्त व्यक्तियों की योग्यता के बीच प्रतीकात्मक संबंध स्थापित किया गया है।

पाँचवें स्वप्न में दो मुखों वाला घोड़ा दोनों ओर से चारा खाता है। जातक में इसकी व्याख्या न्यायिक भ्रष्टाचार के रूप में की गई है। भविष्य में न्यायाधीश दोनों पक्षों से अनुचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं और न्याय की निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। इस स्वप्न में घोड़े का दो मुखों से भोजन करना दो पक्षों से लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति का प्रतीक बनता है। यह न्याय-व्यवस्था में ईमानदारी और निष्पक्षता के महत्व को रेखांकित करता है।^२

छठे स्वप्न में एक बहुमूल्य स्वर्ण पात्र में सियार को मलत्याग करते हुए देखा जाता है। इसकी व्याख्या सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पदों तथा प्रतिष्ठा के अनुचित वितरण से संबंधित है। जातक के अनुसार, भविष्य में योग्य और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपेक्षा करके अयोग्य व्यक्तियों को ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित किया जा सकता है। स्वर्ण पात्र और सियार के बीच विरोधाभास सामाजिक प्रतिष्ठा तथा पद की गरिमा के अनुचित उपयोग का प्रतीक बनता है।

सातवें स्वप्न में एक व्यक्ति रस्सी बुनता है, जबकि उसके नीचे बैठी सियारनी उस रस्सी को खाती जाती है। जातक की व्याख्या में यह गृहस्थ जीवन के संसाधनों के अपव्यय और पारिवारिक दायित्वों की उपेक्षा से संबंधित है। रस्सी बनाने वाले व्यक्ति का श्रम और सियारनी द्वारा रस्सी का खाया जाना उस स्थिति का प्रतीक है, जिसमें एक व्यक्ति की मेहनत से अर्जित संसाधन अनदेखे रूप में नष्ट होते जाते हैं। इस स्वप्न के माध्यम से आर्थिक जिम्मेदारी और पारिवारिक नैतिकता पर विचार किया गया है।^३

आठवें स्वप्न में राजा एक भरे हुए पात्र को अनेक खाली पात्रों के बीच देखता है। लोग खाली पात्रों को भरने के बजाय भरे हुए पात्र में ही लगातार जल डालते रहते हैं। इसकी व्याख्या राज्य के संसाधनों के असमान वितरण के रूप में की गई है। शासक वर्ग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जनता पर अत्यधिक श्रम और आर्थिक भार डाला जा सकता है, जबकि सामान्य लोगों की अपनी आवश्यकताएँ उपेक्षित रह सकती हैं। इस स्वप्न में भरा हुआ पात्र सत्ता के संसाधनों और खाली पात्र सामान्य जनता की आवश्यकताओं का प्रतीकात्मक रूप प्रस्तुत करते हैं।

नवें स्वप्न में राजा कमल से भरे तालाब को देखता है, जिसका मध्य भाग गंदला है, जबकि किनारे का जल स्वच्छ है। जातक की व्याख्या में यह अन्यायपूर्ण शासन और जनता पर अत्यधिक करों के बोझ से संबंधित है। अत्याचार से पीड़ित लोग राज्य के केंद्र को छोड़कर सीमावर्ती क्षेत्रों में चले जा सकते हैं। तालाब के मध्य और किनारे के जल का अंतर शासन के केंद्र और सीमावर्ती क्षेत्रों की भिन्न स्थितियों का प्रतीक बनता है। इस स्वप्न में राजनीतिक व्यवस्था तथा जनता के जीवन के बीच संबंध स्पष्ट होता है।^४

दसवें स्वप्न में एक ही पात्र में पकते चावल के कुछ भाग कच्चे, कुछ अधिक पके और कुछ ठीक से पके हुए दिखाई देते हैं। बुद्ध की व्याख्या में यह भविष्य में अनियमित वर्षा और कृषि उत्पादन में असमानता का संकेत है। अलग-अलग क्षेत्रों में वर्षा की भिन्नता के कारण फसलों की स्थिति भी अलग हो सकती है। इस स्वप्न में एक ही पात्र के चावल की असमान अवस्था को एक ही राज्य में कृषि उत्पादन की विविध स्थिति के प्रतीक के रूप में समझाया गया है।

ग्यारहवें स्वप्न में बहुमूल्य चंदन का विनिमय खट्टी छाछ से किया जाता है। जातक की व्याख्या इसे बौद्ध धर्म के भविष्य में पतन से जोड़ती है। कुछ भिक्षुओं द्वारा लोभवश धर्मोपदेश को भौतिक लाभ का साधन बनाया जा सकता है। धर्म के आध्यात्मिक उद्देश्य की उपेक्षा करके उसे वस्त्र, भोजन अथवा धन प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। इस स्वप्न में मूल्यवान चंदन और साधारण छाछ के बीच अंतर धर्म की आध्यात्मिक महत्ता तथा उसके सांसारिक लाभ के लिए उपयोग किए जाने की प्रवृत्ति का प्रतीक बनता है।^{१०}

बारहवें स्वप्न में खाली कद्दू जल में डूबते हुए दिखाई देते हैं। जातक में इसकी व्याख्या सामाजिक पदों और प्रतिष्ठा की व्यवस्था में उलटफेर के रूप में की गई है। भविष्य में अयोग्य अथवा निम्न पद के लोगों को सत्ता और प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है, जबकि योग्य व्यक्तियों की उपेक्षा हो सकती है। तेरहवें स्वप्न में बड़े-बड़े पत्थरों को जल पर तैरते हुए देखा जाता है। इसकी व्याख्या योग्य, अनुभवी और विद्वान व्यक्तियों की सलाह की उपेक्षा के रूप में की गई है। उनके विचार शासन और समाज में प्रभावहीन हो सकते हैं। इन दोनों स्वप्नों में सामाजिक प्रतिष्ठा, योग्यता और निर्णय-प्रक्रिया के बीच संबंध पर विचार किया गया है।^{११}

चौदहवें स्वप्न में छोटे मेंढक बड़े काले साँपों का पीछा करते और उन्हें निगलते हुए दिखाई देते हैं। जातक की व्याख्या में यह सामाजिक और पारिवारिक शक्ति-संबंधों में परिवर्तन का प्रतीक है। छोटे अथवा कमजोर समझे जाने वाले लोग प्रभावशाली व्यक्तियों पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं। पंद्रहवें स्वप्न में एक साधारण कौए को स्वर्णिम पक्षियों के समूह के साथ देखा जाता है। इसकी व्याख्या शासकों द्वारा अपने निकटस्थ अथवा अयोग्य व्यक्तियों को महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त करने से संबंधित है। परिणामस्वरूप योग्य व्यक्तियों की प्रतिष्ठा और अवसर प्रभावित हो सकते हैं।^{१२}

सोलहवें स्वप्न में बकरियाँ तेंदुओं का पीछा करती हैं और भेड़िए उनसे भयभीत होकर भागते हैं। जातक की व्याख्या में यह सामाजिक और राजनीतिक शक्ति के असंतुलन का प्रतीक है। योग्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को कमजोर कर दिया जा सकता है, जबकि अयोग्य लोगों का प्रभाव बढ़ सकता है। इस प्रकार अंतिम स्वप्न भी सत्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा और न्याय की व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन को प्रस्तुत करता है।^{१३}

सोलह स्वप्नों का समग्र अध्ययन यह संकेत देता है कि जातक में स्वप्न-व्याख्या का उपयोग व्यापक सामाजिक आलोचना के लिए किया गया है। इसमें शासन के दायित्व, न्याय की निष्पक्षता, कृषि और अर्थव्यवस्था की स्थिरता, पारिवारिक सम्मान तथा धार्मिक नैतिकता के विषयों को महत्त्व दिया गया है। स्वप्नों के माध्यम से भविष्य की संभावित अव्यवस्थाओं का चित्रण करते हुए समाज को नैतिक और प्रशासनिक समस्याओं के प्रति सजग करने का प्रयास दिखाई देता है। यह व्याख्या जातक के कथानक पर आधारित है और इसे आधुनिक ऐतिहासिक भविष्यवाणी के प्रमाण के रूप में नहीं समझना चाहिए।^{१४}

शकुन की अवधारणा का संबंध उन संकेतों से है, जिन्हें किसी घटना के शुभ अथवा अशुभ होने की संभावना से जोड़ा जाता है। प्राचीन समाज में व्यक्ति किसी विशेष दृश्य, ध्वनि अथवा वस्तु के स्पर्श को महत्त्वपूर्ण मान सकता था। इन संकेतों के आधार पर भविष्य की संभावनाओं का अनुमान लगाने की परंपरा विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में दिखाई देती है। बौद्ध साहित्य में भी शकुन के संबंध में अनेक मान्यताओं का उल्लेख मिलता है।

महामंगल जातक में शकुन के तीन प्रमुख प्रकारों का वर्णन है। पहला दृश्य अथवा देखने से संबंधित शकुन है। इस मत के अनुसार, व्यक्ति यदि सुबह उठकर किसी शुभ मानी गई वस्तु को देखता है, तो उसे मंगल का संकेत समझा जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में सफेद बैल, गर्भवती स्त्री, लाल मछली, जल से भरा पात्र, घी, स्वच्छ वस्त्र और भोजन जैसी वस्तुओं का उल्लेख है। इन वस्तुओं को देखकर शुभता का अनुभव करने वाले लोग इन्हें अच्छे संकेत के रूप में मानते थे।⁷

दूसरा प्रकार श्रवण अथवा सुनने से संबंधित शकुन है। इस मत के अनुसार, शुभ शब्दों और ध्वनियों का सुनना मंगलकारी माना जाता था। महामंगल जातक में पूर्णता, वृद्धि और भोजन से संबंधित शब्दों का उल्लेख मिलता है। इन शब्दों को सुनने वाले व्यक्ति उन्हें शुभ संकेत समझ सकते थे। इस प्रकार श्रवण शकुन का आधार ध्वनि के अर्थ और उसके प्रति व्यक्ति की सांस्कृतिक प्रतिक्रिया थी।⁷

तीसरा प्रकार स्पर्श से संबंधित शकुन है। इस मत के अनुसार, पृथ्वी, हरी घास, स्वच्छ वस्त्र, सोना, चाँदी, भोजन और अन्य वस्तुओं का स्पर्श शुभ माना जा सकता था। यहाँ किसी वस्तु का महत्त्व केवल उसे देखने में नहीं, बल्कि उसके स्पर्श के अनुभव में भी है। महामंगल जातक में दृश्य, श्रवण और स्पर्श के इन तीन मतों के समर्थकों के बीच विवाद का उल्लेख मिलता है। प्रत्येक समूह अपने मत को श्रेष्ठ बताता था, लेकिन वे एक-दूसरे को निर्णायक रूप से सहमत नहीं कर पाते थे।⁷

इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि शकुन के विषय में प्राचीन समाज में एकरूप मान्यता नहीं थी। अलग-अलग व्यक्ति और समूह विभिन्न प्रकार के संकेतों को महत्त्व देते थे। जातक में इन मतों का वर्णन सांस्कृतिक विश्वासों की विविधता को दर्शाता है। शकुन की अवधारणा को समझने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी संकेत को शुभ मानने का अर्थ उसके सार्वभौमिक अथवा वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित होने का दावा नहीं है। वह किसी विशेष सांस्कृतिक परंपरा में विकसित अर्थ और विश्वास का हिस्सा हो सकता है।

बौद्ध साहित्य में मंगल की अवधारणा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष नैतिक आचरण है। बाहरी संकेतों को शुभ मानने की परंपरा के साथ-साथ बौद्ध विचार में व्यक्ति के व्यवहार, विवेक और सामाजिक संबंधों को भी मंगल का आधार माना गया है। मूल शोध-पत्र में बुद्ध के अनुसार मंगल से संबंधित विचारों का उल्लेख करते हुए सद्भाव, विनम्रता, अहिंसा, संयम और प्रज्ञा पर विशेष ध्यान दिया गया है।⁸

मंगलकारी जीवन का पहला पक्ष अन्य प्राणियों के प्रति सद्भाव है। मनुष्य को देवताओं, माता-पिता, जीव-जंतुओं और अन्य प्राणियों के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए। इस विचार में शुभता का संबंध केवल व्यक्ति की अपनी सफलता से नहीं, बल्कि उसके द्वारा अन्य प्राणियों के प्रति अपनाए गए व्यवहार से भी है। दूसरे व्यक्तियों के प्रति विनम्रता, सम्मान और सहानुभूति सामाजिक जीवन को संतुलित करने वाले गुण माने गए हैं।

बौद्ध मंगल-संबंधी विचार में अपमान अथवा कटु वचन का उत्तर उसी प्रकार न देने का महत्त्व भी प्रस्तुत किया गया है। व्यक्ति यदि दूसरों की कठोरता के प्रति संयम रखता है, तो वह सामाजिक संघर्ष को बढ़ाने के बजाय उसे कम करने का प्रयास करता है। इस प्रकार मंगल का संबंध व्यक्ति की प्रतिक्रिया और आत्मसंयम से है। संकट की स्थिति में विवेक और बुद्धिमत्ता से कार्य करना भी महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि कठिन परिस्थितियों में उचित निर्णय व्यक्ति तथा समाज के कल्याण में सहायक हो सकता है।⁹

जाति, जन्म, संपत्ति अथवा ज्ञान के आधार पर अहंकार न करना भी मंगलकारी व्यवहार का हिस्सा है। इस विचार में व्यक्ति की नैतिकता को बाहरी प्रतिष्ठा से अधिक महत्त्व दिया गया है। सच्चे और विश्वसनीय मित्रों का संग करना, मित्रों के प्रति अहिंसक व्यवहार रखना तथा उदारता से जीवन जीना सामाजिक मंगल के आधार हैं। पारिवारिक संबंधों में सद्भाव, निष्ठा और सदाचार का महत्त्व भी इसी संदर्भ में समझा जा सकता है।

इस दृष्टिकोण में मंगल केवल किसी विशेष वस्तु को देखने या शुभ ध्वनि सुनने से प्राप्त होने वाला परिणाम नहीं है। मंगल का संबंध व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता और उसके नैतिक व्यवहार से है। यदि व्यक्ति सदाचार, संयम, सद्भाव और विवेक का पालन करता है, तो उसका जीवन दूसरों के लिए भी कल्याणकारी हो सकता है। इस प्रकार बौद्ध साहित्य में मंगल की अवधारणा बाहरी शकुनों से आगे बढ़कर नैतिक जीवन की व्यापक समझ प्रस्तुत करती है।

चरक संहिता में शुभ और अशुभ शकुनों का उल्लेख रोगी की अवस्था का आकलन करने के संदर्भ में मिलता है। मूल शोध-पत्र के अनुसार, चिकित्सक जब रोगी के घर जाता था, तब वहाँ दिखाई देने वाले कुछ दृश्य, ध्वनियाँ और वातावरण संबंधी संकेतों को रोगी के संभावित जीवन-परिणाम से जोड़ा जाता था। इन संकेतों को प्राचीन चिकित्सकीय परंपरा में शुभ अथवा अशुभ माना गया था।²⁴⁵

चरक संहिता में शुभ माने गए संकेतों में दही, अक्षत, जल से भरे पात्र, बैल, राजा, आभूषण, सफेद घोड़ा, फल, पुष्प, चंदन और सुगंधित पदार्थों का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार बालक-बालिकाएँ, अपने शिशु के साथ गाय या घोड़ी, मछली, हाथी-दाँत, शंख और मोर जैसे जीव अथवा वस्तुएँ भी शुभ संकेतों में शामिल हैं। दर्पण, स्वस्तिक, सफेद वस्तुएँ, मधुर भोजन और शुभ ध्वनियाँ भी इस सूची में आती हैं।²⁴⁵

इन शकुनों का संबंध केवल दृश्य वस्तुओं से नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में स्तुति, आशीर्वचन, नगाड़े और शंख की ध्वनि तथा सुखद वायु के स्पर्श को भी शुभ संकेतों में शामिल किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि आयुर्वेदिक शकुन की अवधारणा दृश्य, श्रवण और स्पर्श जैसे विभिन्न अनुभवों को समाहित करती है। इन संकेतों को चिकित्सक के आत्मविश्वास और रोगी की स्थिति के पारंपरिक आकलन से जोड़ा गया था।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में वर्णित शकुन आधुनिक चिकित्सकीय निदान का स्थान नहीं ले सकते। इनका अध्ययन प्राचीन चिकित्सा-संस्कृति और उसके विश्वासों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। मूल शोध-पत्र इन संकेतों का वर्णन करता है, लेकिन उनके आधुनिक वैज्ञानिक परीक्षण का विवरण प्रस्तुत नहीं करता। इसलिए इनका महत्व ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन के संदर्भ में समझना अधिक उचित है।¹¹

स्वप्न और शकुन का अध्ययन मनुष्य के मानसिक अनुभवों तथा सांस्कृतिक विश्वासों के संबंध को समझने में सहायक है। किसी व्यक्ति के लिए स्वप्न केवल निद्रा के दौरान अनुभव की गई घटना नहीं रहता। जाग्रत अवस्था में वह स्वप्न को याद कर सकता है, उसके अर्थ पर विचार कर सकता है और उसके आधार पर आशा, चिंता अथवा भय का अनुभव कर सकता है। इसी प्रकार किसी संकेत को शुभ मानने से व्यक्ति को आश्वासन मिल सकता है, जबकि अशुभ संकेत की व्याख्या चिंता उत्पन्न कर सकती है।

मूल शोध-पत्र के अंतिम विवेचन में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि शकुन व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। किसी संकेत को शुभ समझने पर व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ सकता है, जबकि अशुभ संकेत की धारणा उसके मन में आशंका उत्पन्न कर सकती है। यह विचार स्वप्न और शकुन के सामाजिक तथा मानसिक महत्व को समझने के लिए उपयोगी है। फिर भी इसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से प्रमाणित निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे प्रयोगों का विवरण उपलब्ध नहीं है।

स्वप्न और शकुन का सांस्कृतिक महत्व इस बात में भी है कि वे व्यक्ति के निजी अनुभव को सामूहिक अर्थ प्रदान कर सकते हैं। जब कोई व्यक्ति अपना स्वप्न दूसरों को बताता है, तो उसके अर्थ की व्याख्या परिवार, समाज अथवा धार्मिक परंपरा के आधार पर की जा सकती है। इस प्रक्रिया में स्वप्न व्यक्तिगत अनुभव से आगे बढ़कर सामूहिक चर्चा का विषय बन जाता है। मिलिन्दपञ्च में स्वप्न देखने और उसके अर्थ की व्याख्या के बीच अंतर का उल्लेख इस संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है।

महा-सुपिन जातक में स्वप्नों का सामाजिक अर्थ भी इसी व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है। राजा के निजी अनुभवों की व्याख्या भविष्य की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के माध्यम से की जाती है। इस प्रकार स्वप्न का अर्थ केवल व्यक्ति की मनःस्थिति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज की संरचना और उसके नैतिक जीवन पर विचार करने का माध्यम बनता है। जातक के सोलह स्वप्न शासन, न्याय, कृषि, अर्थव्यवस्था और पारिवारिक संबंधों से संबंधित समस्याओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं।⁶

पालि साहित्य और आयुर्वेदिक संहिताओं में स्वप्न संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कई महत्वपूर्ण समानताएँ और भिन्नताएँ प्रस्तुत करता है। दोनों परंपराओं में स्वप्न को सामान्य जाग्रत अनुभव से भिन्न मानसिक घटना के रूप में देखा गया है। दोनों में पूर्व अनुभवों तथा मन की गतिविधि की भूमिका का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त निद्रा की अवस्था और स्वप्न के बीच संबंध पर भी विचार किया गया है।

मिलिन्दपञ्च में स्वप्न को चित्त के अनुभव-पथ में उपस्थित होने वाली घटना के रूप में परिभाषित किया गया है। इस ग्रंथ में स्वप्न देखने वाले व्यक्ति की अवस्था, निद्रा की मध्य स्थिति और स्वप्न के अर्थ की व्याख्या पर ध्यान दिया गया है। चरक संहिता में स्वप्नों का वर्गीकरण दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित, भाविक और दोषज प्रकारों में किया गया है। यह वर्गीकरण पूर्व अनुभव, इच्छा, कल्पना, संभावित परिणाम और शारीरिक दोषों को महत्त्व देता है।²⁴⁵

दोनों परंपराओं में पूर्व अनुभव से संबंधित स्वप्नों की पहचान की जा सकती है। मिलिन्दपञ्च के दिट्ठपुब्ब और कतपुब्ब स्वप्न चरक के दृष्ट तथा अनुभूत स्वप्नों से तुलनात्मक संबंध रखते हैं। इसी प्रकार स्वप्न के शुभ-अशुभ परिणामों पर विचार दोनों परंपराओं में मिलता है। किंतु दोनों ग्रंथों का उद्देश्य एक समान नहीं है। मिलिन्दपञ्च में स्वप्न का विवेचन प्रश्नोत्तर और दार्शनिक संवाद की शैली में किया गया है, जबकि चरक संहिता में स्वप्न का संबंध चिकित्सा और स्वास्थ्य के व्यापक विवेचन से है।¹²⁴⁵

निद्रा के संबंध में भी तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी है। मिलिन्दपञ्च में हल्की निद्रा को स्वप्न के अनुभव से जोड़ा गया है। सुश्रुत संहिता में तंद्रा की अवस्था और इंद्रियों की आंशिक सक्रियता का उल्लेख मिलता है। इन विचारों में समानता यह है कि स्वप्न के लिए व्यक्ति की अवस्था को महत्त्व दिया गया है। फिर भी दोनों ग्रंथों की भाषा, वर्गीकरण और व्याख्या को एक-दूसरे के समान मानना उचित नहीं होगा।¹³

शकुन के विषय में भी दोनों परंपराओं में भिन्न उद्देश्य दिखाई देते हैं। चरक संहिता में शुभ-अशुभ शकुन रोगी की स्थिति के पारंपरिक आकलन से संबंधित हैं। बौद्ध साहित्य में शकुन के दृश्य, श्रवण और स्पर्श संबंधी मतों का उल्लेख मिलता है, लेकिन मंगल की नैतिक अवधारणा में सदाचार, सद्भाव और संयम को भी विशेष महत्त्व दिया गया है। इस प्रकार आयुर्वेदिक शकुन का चिकित्सकीय संदर्भ और बौद्ध मंगल का नैतिक संदर्भ अलग-अलग हैं, यद्यपि दोनों में शुभता की अवधारणा का अध्ययन किया जा सकता है।²⁴⁵

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वप्न और शकुन प्राचीन भारतीय बौद्ध तथा आयुर्वेदिक साहित्य में बहुआयामी अवधारणाएँ हैं। इनके माध्यम से मनुष्य के मानसिक अनुभव, शारीरिक अवस्था, सामाजिक संबंध, धार्मिक विश्वास और नैतिक जीवन पर विचार किया गया है। स्वप्न को केवल निद्रा के दौरान उत्पन्न दृश्य के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसके अर्थ और प्रभाव को समझने के लिए विभिन्न व्याख्यात्मक पद्धतियाँ विकसित की गईं।

मिलिन्दपञ्च स्वप्न को चित्त के अनुभव-पथ में उपस्थित होने वाली घटना के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें स्वप्न की उत्पत्ति, निद्रा की अवस्थाओं, मन की सक्रियता तथा स्वप्नफल की व्याख्या पर विस्तृत संवाद मिलता है। नागसेन का विवेचन स्वप्न देखने और उसके अर्थ को जानने के बीच अंतर स्थापित करता है। यह अंतर स्वप्न को एक अनुभव और उसकी व्याख्या को एक अलग प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायक है।¹

चरक संहिता में स्वप्नों का वर्गीकरण पूर्व अनुभव, इच्छा, कल्पना, संभावित परिणाम और शारीरिक दोषों के आधार पर किया गया है। सुश्रुत संहिता में तंद्रा और निद्रा की अवस्थाओं का वर्णन स्वप्न के अध्ययन के लिए उपयोगी है। इन ग्रंथों में स्वप्न को व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक अवस्था से संबंधित माना गया है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण में स्वप्न का महत्त्व स्वास्थ्य तथा रोग के पारंपरिक आकलन के संदर्भ में है।²⁴⁵³

महा-सुपिन जातक के सोलह स्वप्न विशेष महत्त्व रखते हैं। इन स्वप्नों के माध्यम से शासन में भ्रष्टाचार, न्याय की अव्यवस्था, आर्थिक असमानता, कृषि की अनिश्चितता, पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन और धार्मिक नैतिकता के पतन जैसी समस्याओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। जातक की स्वप्न-व्याख्या को सामाजिक आलोचना और नैतिक चेतावनी के रूप में भी समझा जा सकता है। इन स्वप्नों का अध्ययन यह दिखाता है कि प्राचीन बौद्ध साहित्य में स्वप्न सामाजिक व्यवस्था पर चिंतन का माध्यम बन सकता था।⁶

शकुन के संबंध में बौद्ध साहित्य दृश्य, श्रवण और स्पर्श आधारित मान्यताओं का वर्णन करता है। महामंगल जातक में इन मतों के बीच विवाद का उल्लेख मिलता है, जिससे शकुन संबंधी विश्वासों की विविधता स्पष्ट होती है। बौद्ध मंगल-संबंधी विचार में बाहरी संकेतों के साथ नैतिक आचरण, सद्भाव, संयम, विवेक और अहिंसा को भी महत्त्व दिया गया है। इस प्रकार शुभता की अवधारणा केवल किसी वस्तु अथवा घटना के संकेत तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति के आचरण और सामाजिक व्यवहार से भी संबंधित होती है।⁷⁸

आयुर्वेदिक साहित्य में शुभ-अशुभ शकुन का संबंध रोगी की स्थिति के पारंपरिक आकलन से है। चरक संहिता में वर्णित विभिन्न दृश्य, ध्वनियाँ और स्पर्श प्राचीन चिकित्सा-संस्कृति के विश्वासों को समझने में सहायक हैं। किंतु इन संकेतों को आधुनिक चिकित्सकीय निदान अथवा रोग के परिणाम का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं माना जा सकता। उनका अध्ययन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में करना अधिक उचित है।²⁴⁵¹¹

अंततः कहा जा सकता है कि स्वप्न और शकुन का अध्ययन प्राचीन भारतीय बौद्धिक परंपरा में मन, शरीर, समाज और नैतिकता के पारस्परिक संबंधों को समझने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। पालि साहित्य में स्वप्न का दार्शनिक, अनुभवात्मक और सामाजिक पक्ष सामने आता है, जबकि आयुर्वेदिक संहिताओं में उसका चिकित्सकीय और शारीरिक-मानसिक पक्ष प्रमुख है। दोनों परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि स्वप्न और शकुन प्राचीन समाज में केवल व्यक्तिगत विश्वास नहीं थे, बल्कि मानव जीवन को समझने और उसकी व्याख्या करने के व्यापक सांस्कृतिक साधन भी थे।

1. मिलिन्दपञ्च, चतुर्थ भाग, 8.33–8.38। स्वप्न की परिभाषा, स्वप्नफल, निद्रा की अवस्था और पूर्व-निमित्त स्वप्न संबंधी संवाद।
2. चरक संहिता, सूत्रस्थान 21.35; सूत्रस्थान 5.41–45; सूत्रस्थान 5.9–25; सूत्रस्थान 12.71–80। निद्रा, स्वप्न-वर्गीकरण, दोषज स्वप्न तथा शुभ-अशुभ शकुन संबंधी विवेचन।
3. सुश्रुत संहिता, प्रथम भाग 29.15; तृतीय भाग 4.49। स्वप्न की परिभाषा और तंद्रा संबंधी संदर्भ।
4. जातक, संख्या 77, महा-सुपिन जातक। कोसल के राजा के सोलह स्वप्न और उनकी बुद्ध द्वारा की गई व्याख्या।
5. जातक, संख्या 453, महामंगल जातक। दृश्य, श्रवण और स्पर्श संबंधी शकुनों का वर्णन।
6. खुद्दकपाठ, मंगल-संबंधी पाठ, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।
7. दीघ निकाय, खंड I, पृष्ठ 9 तथा 54, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।
8. संयुक्त निकाय, खंड I, पृष्ठ 193 तथा खंड IV, पृष्ठ 117, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।
9. सुत्तनिपात, गाथा 360, 807 तथा 927, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।
10. निद्देस, खंड I, पृष्ठ 126, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।
11. जातक, खंड I, पृष्ठ 334, मूल लेख में उल्लिखित संदर्भ।

Footnotes

1. मिलिन्दपञ्च, चतुर्थ भाग, 8.33–8.38। स्वप्न की परिभाषा, पूर्व-निमित्त, निद्रा तथा स्वप्नफल संबंधी संवाद।
2. चरक संहिता, सूत्रस्थान 21.35। निद्रा और स्वप्न के संबंध में संदर्भ; प्रयुक्त संस्करण से पाठ-संदर्भ सत्यापित करें।
3. सुश्रुत संहिता, प्रथम भाग 29.15 तथा तृतीय भाग 4.49। स्वप्न, तंद्रा और निद्रा संबंधी संदर्भ; संस्करणानुसार स्थान-संख्या जाँचें।
4. चरक संहिता, सूत्रस्थान 5.41–45। स्वप्नों के वर्गीकरण संबंधी संदर्भ; मूल लेख में उल्लिखित संख्या का प्रमाणित संस्करण से मिलान अपेक्षित है।
5. चरक संहिता, सूत्रस्थान 5.9–25 तथा 12.71–80। शुभ-अशुभ शकुन/संबद्ध विवेचन के संदर्भ; संस्करण और अध्याय-विन्यास जाँचें।
6. जातक, संख्या 77, महा-सुपिन जातक। कोसल के राजा के सोलह स्वप्नों तथा उनकी व्याख्या का आख्यान।
7. जातक, संख्या 453, महामंगल जातक। दृश्य, श्रवण और स्पर्श-संबंधी शकुनों का वर्णन।
8. खुद्दकपाठ, मंगल-संबंधी पाठ। मंगल की नैतिक अवधारणा के लिए संदर्भ; पाठ/संस्करण विवरण मूल लेख में अपूर्ण है।
9. दीघ निकाय, खंड I, पृ. 9 और 54; संयुक्त निकाय, खंड I, पृ. 193 तथा खंड IV, पृ. 117। ये पृष्ठ-संदर्भ मूल पांडुलिपि/लेख से लिए गए हैं; प्रयुक्त संस्करण से सत्यापन आवश्यक है।
10. सुत्तनिपात, गाथा 360, 807 और 927; निद्देस, खंड I, पृ. 126; जातक, खंड I, पृ. 334। मूल लेख में दिए गए संदर्भ; संस्करणानुसार सत्यापन अपेक्षित है।
11. यहाँ वर्णित स्वप्नफल और शकुन प्राचीन ग्रंथों में दर्ज सांस्कृतिक/धार्मिक मान्यताओं का विवेचन हैं; इन्हें आधुनिक वैज्ञानिक या चिकित्सकीय प्रमाण के रूप में नहीं लिया गया है।